हिन्दी चित्रपट संगीत में लोक संगीत का प्रयोग, अवलोकन एवं समीक्षा

डॉ० सिमरप्रीत कौर
असिस्टेंट प्रोफेसर
ए. सी. ए. एस. एस.
एटरनल यूनिवर्सिटी, बरू साहेब (H.P.) 173101

भूमिका

हिन्दुस्तान में चित्रपट संगीत एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। यह जन–जन का संगीत है। हिन्दी चित्रपट संगीत के मुख्य दो पहलु हैं। पहला– पृष्ठभूमि संगीत तथा दूसरा हिन्दी फिल्मों के गीत। विदेशी चलचित्रों के विपरीत हिन्दी चलचित्र में पहले सवाक चलचित्र आलमआरा (1931) से ही गीत अन्तर्निहित हो गए। गीतों का प्रयोग न केवल चलचित्र के लिए सफल रहा, बल्कि इस प्रयोग से हिन्दुस्तान में एक नवीन संगीत शैली का जन्म हुआ। आगे चलकर हिन्दी चित्रपट संगीत का प्रभाव एवं प्रसिद्धि अन्य संगीत शैलियों को कहीं पीछे छोड़ गई और तब से लेकर आज तक हिन्दी फिल्म संगीत अपना स्थान बनाए हुए हैं। हिन्दी चित्रपट संगीत का कोई विशेष प्रारूप निर्धारित करना कठिन है इसका वैविध्य कथानक, दृष्टान्त, गीतकार, संगीतकार के साथ–साथ निर्देशक निर्माता और जन साधारण की रूचि पर निर्भर करता है। अतः विभिन्न कथाएँ विभिन्न संगीतकार, विभिन्न गीतकार जनरूचि आदि बॉलीवुड संगीत में सम्मिलित हो जाते हैं। यही कारण है कि इसकी संगीत शैली बहुत विशाल है जिसका कोई विशिष्ट स्वरूप निर्धारित करना कठिन है। हिन्दी चित्रपट संगीत अनेक संगीत शैलियों को अपने अन्दर समाविष्ट किए हुए है। कथानक अन्य कारकों एवं जनरूचि के आधार पर शास्त्रीय बन्दिशें, उपशास्त्रीय गायनशैलियाँ, लोक संगीत, सुगम संगीत और पश्चिमी सांगीतिक शैलियों का प्रयोग गीतों में किया गया मिलता है। उदाहरणतः पहले सवाक चलचित्र आलमआरा (1931) के गीत उस समय के पारसी नाटक से लिए गए, क्योंकि यह चलचित्र पारसी नाटक पर ही आधारित था। ऐसे ही बैजुबावरा (1952) के गीत शास्त्रीय संगीत पर आधारित है तथा डिस्को डांसर (1982) के गीतों में पश्चिमी संगीत शैली डिस्को का प्रयोग किया गया है।

हिन्दी चित्रपट संगीत शैली का जन्म अन्य शैलियों को मूलाधार रख, सीमित समय की विशेषता लिए हुए है। 3 से 7 मिनट के गीत में भावों को अति तीव्रता से प्रस्तुत करने का प्रयास है, जो प्रेक्षकों को तन्मयलीन कर उनमें भावों का संचार करने में सक्षम रहा है।

यदि हिन्दी चित्रपट संगीत के इतिहास एवं विकास को गौर से देखा जाए तो यह विदित होता है, कि समय–समय पर विभिन्न संगीत शैलियों का प्रभाव प्रबल रहा है तो कभी मध्यम रूप में निहित रहा है। जहाँ प्रारंभिक दौर में शास्त्रीय संगीत बन्दिशें ही हिन्दी फिल्मों के गीत बनें, वहीं दूसरी ओर लगभग (1965) के बाद से अन्य संगीत शैलियों का प्रयोग अधिक होने लगा, परन्तु अनेक संगीत शैलियों में से भी लोक संगीत का प्रयोग निरंतर देखा जा सकता है। सवाक् चलचित्रों के पहले दशक से लेकर आज तक, लोक संगीत पर आधारित गीतों की संरचना निरंतर होती आई है और वह गीत सदाबहार गीतों की सूची में अंकित हो गए।

लोक संगीत एक ऐसा संगीत है जो मानव के भावों को बहुत ही सरलता से अभिव्यक्त करने में सक्षम है। यह वह पारम्परिक संगीत है जो सदियों से चला आ रहा है। लोक संगीत के गुण जैसे– सहज अभिव्यक्ति, प्रादेशिक भाषा एवं सरल धुन व लय, इसे मनुष्य की सभी परिस्थितियों जैसे सुख–दुख आदि का सारथी बना देते है। यही कारण है कि हिन्दी फिल्मों में लोक संगीत का प्रयोग श्रोताओं के साथ संबंध बनाने में सफल होता है।

अवलोकन

हिन्दी चित्रपट संगीत में लोक संगीत का सर्वप्रथम प्रयोग किसने किया यह कहना बहुत कठिन है। पहले के संगीतकारों के गीतों में उनके प्रादेशिक संगीत का प्रभाव देखा जा सकता है। अपितु प्रत्यक्ष रूप में लोक संगीत का प्रयोग बॉम्बे टॉकीज के चलचित्र ''कंगन (1939)'' में रामचन्द्रपाल द्वारा किया गया मिलता है। इस चलचित्र में बंगाल के नाविकों का गीत भटियाली पर आधारित संगीत की संरचना प्रत्यक्ष होती है। सन् 1941 के चलचित्र खजांची में गुलाम हैदर ने पंजाबी लोक संगीत का प्रयोग कर हिन्दी फिल्मों के गीतों में एक जीवन्तता भर दी। इस चलचित्र का गीत 'दीवाली फिर आ गई सजनी' में पंजाबी लय का प्रयोग अति सफल रहा जिसमें ढोलकी पर ताल का वादन पंजाबी शैली में किया गया मिलता है। खानदान (1942) के गीतों में भी गुलाम हैदर ने इसी शैली का प्रयोग किया। तत्पश्चात् नौशाद द्वारा संगीतबद्ध चलचित्र रत्न (1944) के गीतों में उत्तर प्रदेश के लोक संगीत का प्रयोग भी बहुत सफल रहा। कश्मीरी, हिमाचली एवं बंगाली लोक संगीत का प्रभाव भी इसी दौर में सम्मिलित हो गया था। आगे चलकर अन्य प्रदेशों के लोक संगीत का भी कुशल प्रयोग शामिल हुआ। विभिन्न प्रदेशों के लोक संगीत का बहुतायत में प्रयोग करने के कारण कई संगीतकार, संबंधित प्रदेश के लोक संगीत के उत्कृष्ट प्रयोग के लिए पहचाने जाने लगे। जैसे– ओ० पी० नैयर पंजाबी, नौशाद उत्तर प्रदेशीय, एस० डी० बर्मन, बंगाली तथा रवीन्द्र जैन पहाड़ी लोक संगीत के उत्तम प्रयोग के लिए प्रसिद्ध हुए।

प्रारम्भ से ही हिन्दी चित्रपट संगीत में लोक संगीत का प्रयोग प्रभावशाली रहा इसीलिए आज तक भी यह हिन्दी चित्रपट संगीत में अपना विशेष स्थान बनाए हुए है। ''हिन्दी फिल्मों में माधुर्य की बढ़ती मांग के लिए लोक संगीत टिकने का माध्यम है''– दीपा राणाडे। लोक संगीत हृदय से निकली हुई भावनाओं की सरल अभिव्यक्ति है जो दर्शकों को अपनत्व का आभास कराती है तथा सहज ही आनंदित कर देती है, इसी कारण लोक संगीत का प्रयोग संगीतकारों के लिए सुरक्षा

कवच के रूप में देखा गया मिलता है। कंगन (1939) से लेकर 2015 तक अनेकों ही गीत लोक संगीत शैली से प्रभावित रहे है तथा प्रत्येक का उल्लेख अत्यन्त विस्तृत हो जाएगा। तथापि लोक संगीत से प्रभावित चलचित्रों के मुख्य गीत निम्नांकित है। जो आज भी श्रोताओं के मनस पटल पर अमिट छाप छोड़ गए।

1. राजस्थानी लोक संगीत पर आधारित गीत
- ऽ सुनियो जी – (लेकिन, 1990)
- ऽ केसरिया बालमा – (लम्हें, 1991)
- ऽ मोरनी बागां मां – (लम्हें, 1991)
- ऽ गलती महारे से – (करन अर्जुन, 1995)
- ऽ नीम्बुड़ा नीम्बुड़ा – (हम दिल दे चुके सनम, 1999)

2. गुजराती लोक संगीत पर आधारित गीत
- ऽ हे नाम रे सबसे – (सुहाग, 1974)
- ऽ ढोली तारो – (हम दिल दे चुके सनम, 1999)
- ऽ काई पो चे – (हम दिल दे चुके सनम, 1999)
- ऽ राम जी की चाल, गोलियों की रासलीला रामलीला – (राम–लीला, 2013)

3. मराठी लोक संगीत पर आधारित गीत
- ऽ मला ज्याऊ दे – (फरारी की सवारी, 2012)
- ऽ चिकनी चमेली – (अग्निपथ, 2012)
- ऽ इंग्लिश विंग्लिश – (नवराई माझी, 2012)

4. उत्तर प्रदेश लोक संगीत पर आधारित गीत
- ऽ झुमका गिरा रे – (मेरा साया, 1965)
- ऽ चलत मुसाफिर – (तीसरी कसम, 1966)
- ऽ मैं आई हूँ यू० पी० – (शूल, 1999)
- ऽ नमक इश्क का – (ओंकारा, 2006)
- ऽ बीड़ी जलइले – (ओंकारा, 2006)
- ऽ मुन्नी बदनाम हुई – (दबंग, 2010)
- ऽ फेविकाल से – (दबंग, 2010)

5. बंगाली लोक संगीत पर आधारित गीत
- ऽ सुन मेरे बंधु रे – (सुजाता, 1959)
- ऽ मेरे साजन है उस पार – (बन्दिनी, 1963)

6. बिहार झारखण्ड लोक संगीत पर आधारित गीत
- ऽ चिं ता ता, चिता चिता – (राउडी राठौर, 2012)
- ऽ वुमानिया – (गैंग्स ऑफ वासेपुर, 2012)

7. असम लोक संगीत पर आधारित गीत
- ऽ दिल हुम हुम करे – (रूदाली,1993)

8. पहाड़ी लोक संगीत पर आधारित गीत
- ऽ हुस्न पहाड़ो का – (राम तेरी गंगा मैली, 1985)

9. भोजपुरी लोक संगीत पर आधारित गीत
- ऽ हे गंगा मैया तोये – (गंगा मैया तोहे पिथरी चढ़रको,1963)
- ऽ लुक छुप बदरा में – (गोदान, 1963)

10. दक्षिण भारत लोक संगीत पर आधारित गीत
- ऽ मुतु कोड़ी कवाड़ी हड़ा – (दो फूल, 1973)
- ऽ जिया जले – (दिल से, 1998)
- ऽ ढ़िका चिका – (रेड्डी, 2011)
- ऽ लुंगी डांस –(चेन्नई एक्सप्रेस, 2013)

11. पंजाबी लोक संगीत पर आधारित गीत
- ऽ लेके पहला पहला प्यार – (सी0आई0डी0, 1950)
- ऽ की मैं झूठ बोलेया – (जागते रहो, 1956)
- ऽ रेशमी सलवार – (नया दौर, 1957)
- ऽ उड़े जब–जब जुल्फै तेरी – (नया दौर, 1957)
- ऽ ये देश है वीर जवानों का – (नया दौर, 1957)
- ऽ मेरी जाँ बल्ले–बल्ले – (कश्मीर की कली, 1964)
- ऽ डोली चढ़ते ही हीर वे – (हीर रांझा, 1970)
- ऽ छल्ला – (क्रुक 2010)
- ऽ बारी बरसी खटन गयांसी – (बैंड बाजा बारात, 2010)
- ऽ जुगनी –(तनु वेड्स मनु, 2011)

उपरोक्त गीतों के अतिरिक्त भी अनेक ऐसे गीत मिलते हैं जो लोक संगीत की धुन, लय, वादन शैली नृत्य आदि पक्षों का प्रयोग कर सफल हुए हैं। हिन्दी चित्रपट के बहुत से गीत ऐसे हैं जो बहु प्रचलित है जो आज भी जन–जन को मनोरंजित कर रहे हैं। निःसंदेह राजस्थानी, मराठी व गुजराती के लोक संगीत से प्रेरित चलचित्रों के

गीत अल्पमात्रिक मिलते हैं, परन्तु उनका प्रभाव एवं लोकप्रियता इतनी अधिक है कि उसकी तुलना संख्या से करना उचित नहीं है।

गुजराती लोक संगीत के गरबा और डांडिया नृत्य प्रकारों का भी प्रयोग मिलता है और राजस्थान के लोकसंगीत का प्रयोग तो चलचित्र की पटकथा हेतु बहुत सुन्दरता से किया गया। उत्तर प्रदेश के लोक संगीत का प्रयोग तो 1944 से लेकर आज तक निरंतर जारी है और आजकल यह आइटम नंबर्स के लिए भी किया जाने लगा है।

एस० डी० बर्मन द्वारा बांग्ला संगीत मुख्यतः प्रयोग किया गया। दक्षिण भारत के लोक संगीत के विपरीत वहाँ के चित्रपटीय संगीत का प्रयोग अधिक देखने को मिलता है। इसके अतिरिक्त लोक संगीत का प्रयोग आवश्यकतानुसार चलचित्र की पटकथा के अनुरूप संबंधित प्रदेशों पर आधारित होने के कारण किया गया, जिसके आभाव में चलचित्र की सार्थकता स्थापित नहीं हो सकती थी। पंजाबी लोक संगीत का प्रयोग स्वावलंबी रूप से बड़े पैमाने पर हो रहा है। पंजाबी लोक संगीत की कई गायन शैलियाँ जैसे टप्पे, जुगनी, हीर, छल्ला आदि से प्रेरित हिन्दी चलचित्र के गीत बहुप्रचलित हुए हैं और इनकी संख्या निर्धारित करना बहुत कठिन है।

निष्कर्षः
हिन्दी चित्रपट संगीत में लोक संगीत का प्रयोग बहुत व्यापक है, लोक संगीत के प्रयोग से सरंचित हिन्दी चित्रपट संगीत के गीत अक्सर लोक संगीत के समानार्थक मान लिए जाते हैं इस विषय में निम्नांकित कथन विचारणीय हैं।

जैसे– गंगा जमुना से ''नैन लड़ जई हैं' भोजपुरी संगीत का पर्याय बन गया, बॉबी में ''झूठ बोले कौआ काटे'' मछुआरों के कोली गीत का, ''मैं तो भूल चली बाबुल का देस'' गुजराती गरबे का ''वहाँ कौन है तेरा?'' बंगाल के लोक संगीत का, मधुमती ''चढ़ गयो पापी बिछुआ'' आसामी बिहु का ''केसरिया बालमा पधारो म्हारे देस'' राजस्थानी मांड का, राम तेरी गंगा मैली से, ''सुन सायबा सुन'' पहाड़ी धुन का, मिशन कश्मीर से ''बुमरो, कश्मीरी लोक संगीत का और दिल्ली–6 में ''ससुराल गेंदा फूल'' छत्तीसगढ़ी लोक संगीत विशाल भारद्वाज की इश्कियाँ और ओमकारा ने हिन्दी फिल्मों में लोक संगीत को और अधिक बढ़ावा दिया।

हिन्दी चलचित्रों के उपरोक्त गीत इतने प्रसिद्ध हुए हैं कि उन्हें संबंधित प्रदेश के लोक संगीत से ही जोड़ के देखा जाने लगा, यद्यपि ऐसा आवश्यक नहीं है कि संगीत निर्देशकों ने इन गीतों को पूर्णतया लोक संगीत के पारम्परिक रूप में ही अपनाया हो। केवल लोक संगीत की धुन, लय या कभी–कभी तो मात्र प्रादेशिक भाषा के प्रयोग से ही श्रोतागण चलचित्रों के गीतों को लोक गीत समझ लेते हैं।

इसमें कोई संदेह नहीं कि हिन्दी फिल्मों के गीतों में लोकगीतों का आभास जनसाधारण को भ्रमित कर रहा है और वह चलचित्र के गीतों को ही लोक संगीत मानने लग गए हैं। जहाँ पहले शादी–ब्याह में बुजुर्ग महिलाओं द्वारा शगुन के गीत और धमाचौकड़ी के लिए नृत्य शैली के पारंपरिक गीत गाए जाते थे। वहीं आज डी जे पर हिन्दी फिल्मों के गीत इनकी पूर्ति कर देते हैं। इससे हमारे लोक संगीत की शुद्धता और परंपरा को खो देने का खतरा बना हुआ हैं। वहीं दूसरी ओर आजकल के वैश्वीकरण के युग में जहाँ पश्चिमी संगीत शैलियाँ जैसे रॉक, जैज, रैप आदि युवा पीढ़ी को अति प्रभावित करने में सक्षम है, हिन्दी चित्रपट संगीत लोक संगीत को संरक्षित रखने का अच्छा माध्यम है। आजकल की भावीपीढ़ी को लोक संगीत से अवगत कराने के लिए हिन्दी फिल्म संगीत विशेष योगदान दे रहा है।

अतः यदि हिन्दी चित्रपट संगीत में लोक संगीत का प्रयोग सावधानी से किया जाए तो इसमें कोई क्षति नहीं। संगीत निर्देशकों को लोक संगीत के पारम्परिक रूप को ध्यान में रखकर गीतों की सरंचना करनी चाहिए, यही नहीं लोक संगीत की कुछ विलुप्त हो रही शैलियों को भी हिन्दी चित्रपट में सम्मिलित करना चाहिए इससे न केवल चित्रपट संगीत की विविधता में बढ़ोतरी होगी बल्कि विलुप्त हो रही शैलियों का भी संरक्षण हो जाएगा। हिन्दुस्तान में हिन्दी चित्रपट संगीत ही एक ऐसा माध्यम है जो अधिकाधिक श्रोताओं को आकर्षित करता है तथा लोक संगीत एक ऐसी संगीत शैली है जो जनसाधारण के दिल के बहुत करीब है। अतः हिन्दी चित्रपट संगीत में लोक संगीत का प्रयोग न केवल जन साधारण को मनोरंजित करता है बल्कि भारत के विभिन्न प्रान्तों के लोक संगीत की विशिष्ट शैलियों से अवगत भी करवाता है।

ऐसा देखा गया है कि लोक संगीत पर आधारित हिन्दी चलचित्रों के गीत अधिक प्रसिद्ध होते हैं, जो चलचित्र की सफलता एवं आय वृद्धि में भी विशेष योगदान देते हैं। अतः यह कहना अतिश्योक्ति नहीं होगी कि हिन्दी चित्रपट में लोक संगीत का प्रयोग दोनों शैलियों को लाभान्वित कर रहा है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :–

1 गर्ग, उमा (डॉ0) संगीत का सौन्दर्य बोध, संजय प्रकाशन, ए– 2/703, प्रगति विहार, सोन बाज़ार दिल्ली–110053 (प्रथम संस्करणः 2000)

2. डे, दीपा राणा, Sounds fo the Soil, The Tribune, Spectrum Sunday, September ¼2012½
http://ww.tribuneindia.com/2012/201220930/specturm/k~ 6.html

3. विमल (डॉ0), हिन्दी चित्रपट एवं संगीत का इतिहास, सोमनाथ दल संजय प्रकाशन, 43 78ध्4–वी, 209 जे0एन0डी0, हाउस गली मुरारीलाल, अंसारी रोड, दरियागंज नई दिल्ली–110002 (प्रथम संस्करणः2010)

4. भार्गव, अनिल, हिन्दी फिल्म संगीत 75 वर्षों का सफर, वाड्मय प्रकाशन, वाड्मय हाउस, ई–776/7, लाल कोठी योजना जयपुर–302015 (द्वितीय संस्करणः 2011)
Evolution fo Hindi film song part 2,
5. http://ww.upperstall.com/content/evolution-hindi-film-song-part-2